



**Miis. Priya Chaudhari**

**03 Feb 2005**

**07:15 PM**

**Nohar River**

**Model: Web-MyKundli**

**Order No: 121084001**

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 03/02/2005  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 19:15:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 29:49:22 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Nohar River  
राज्य \_\_\_\_\_: Rajasthan  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 29:11:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 74:43:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:31:08 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 18:43:52 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:13:51 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 03:39:13 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:19:15 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:11:01 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:51:47 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 20:54:21 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 05:24:08 सिंह

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: सिंह - सूर्य  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: अनुराधा - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शनि  
योग \_\_\_\_\_: ध्रुव  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मृग  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: कीटक  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: नी-निष्ठा  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कुम्भ

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1926	माघ	14
पंजाबी	संवत : 2061	माघ	22
बंगाली	सन् : 1411	माघ	20
तमिल	संवत : 2061	थई	21
केरल	कोल्लम : 1180	मकरम	21
नेपाली	संवत : 2061	माघ	21
चैत्रादि	संवत : 2061	माघ	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2061	पौष	कृष्ण 9

### पंचांग

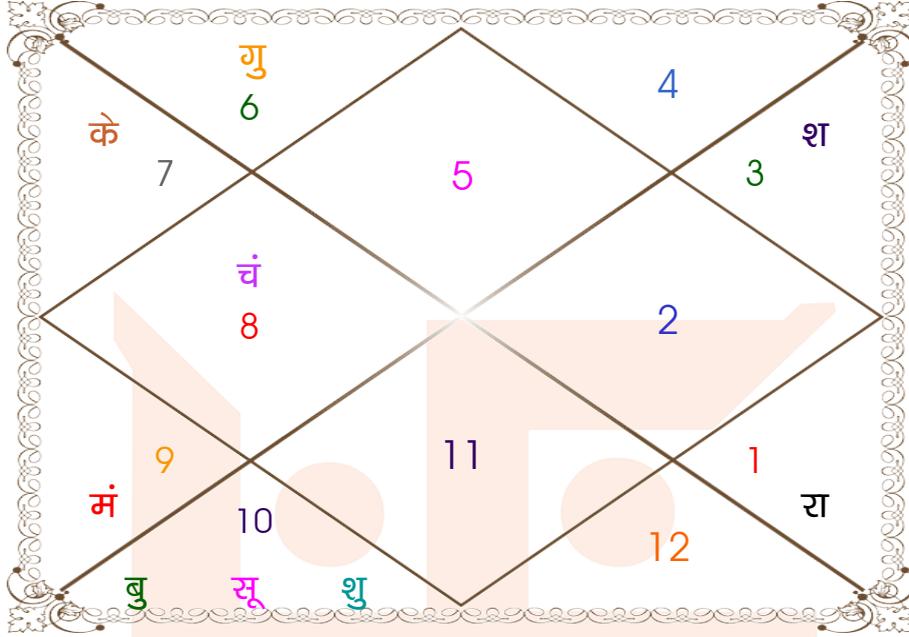
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 22:59:49  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : विशाखा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:06:36 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : वृद्धि  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:26:41 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ध्रुव  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:49:19 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 15:21:00  
भभोग \_\_\_\_\_ : 57:01:57  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शनि 13 वर्ष 11 मा 8 दि

### घात चक्र

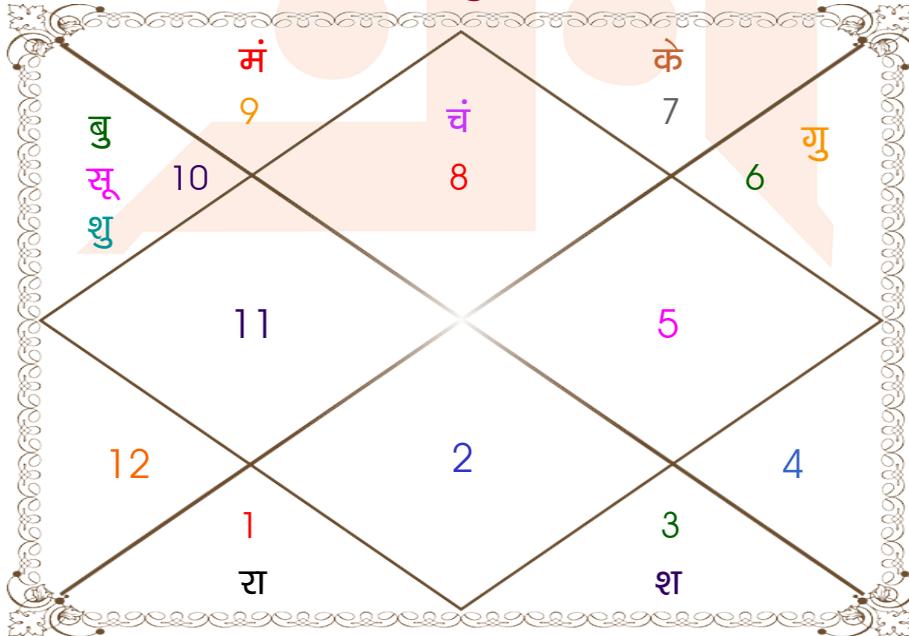
मास \_\_\_\_\_ : आश्विन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_ : गर  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मकर  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
बुध \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
गुरु \_\_\_\_\_ : मीन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मेष  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : वृष

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली

	रा		श
शु सू बु			ल
मं	चं	के	गु

## लग्न कुण्डली

	रा	
श		
		शु सू बु
ल	के	मं
गु		चं

विंशोत्तरी  
शनि 13वर्ष 11मा 8दि  
शनि

03/02/2005

14/01/2120

शनि	13/01/2019
बुध	13/01/2036
केतु	13/01/2043
शुक्र	13/01/2063
सूर्य	13/01/2069
चन्द्र	13/01/2079
मंगल	13/01/2086
राहु	14/01/2104
गुरु	14/01/2120

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 11मा 6दि  
संकटा

11/01/2026

11/01/2034

संकटा	22/10/2027
मंगला	11/01/2028
पिंगला	22/06/2028
धान्या	20/02/2029
भ्रामरी	11/01/2030
भद्रिका	21/02/2031
उल्का	22/06/2032
सिद्धा	11/01/2034

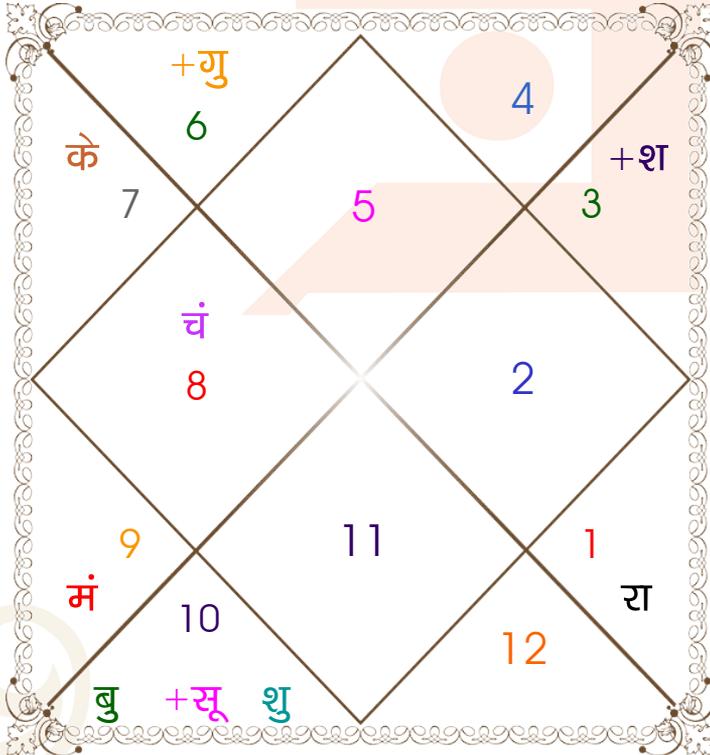
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	05:24:08	310:45:54	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	---
सूर्य			मक	20:54:21	01:00:52	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			वृश्चि	06:53:02	13:55:59	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	नीच राशि
मंगल			धनु	03:48:59	00:42:17	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	मित्र राशि
बुध	अ		मक	13:08:40	01:39:20	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	सम राशि
गुरु	व		कन्या	24:55:58	00:00:17	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			मक	07:13:27	01:15:09	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	मित्र राशि
शनि	व		मिथु	28:19:21	00:04:21	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
राहु	व		मेष	01:43:08	00:01:39	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	01:43:08	00:01:39	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
हर्ष			कुंभ	11:36:01	00:03:17	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	---
नेप			मक	21:08:23	00:02:22	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	29:52:30	00:01:35	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
दशम भाव			वृष	03:09:51	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	शनि	--

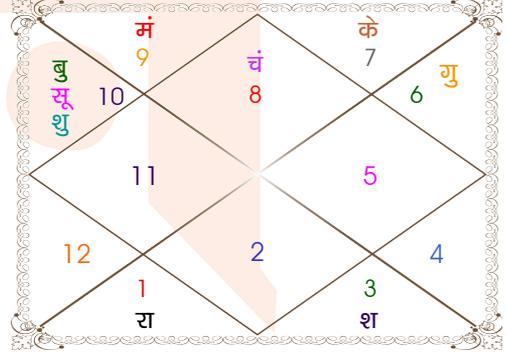
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:55:35

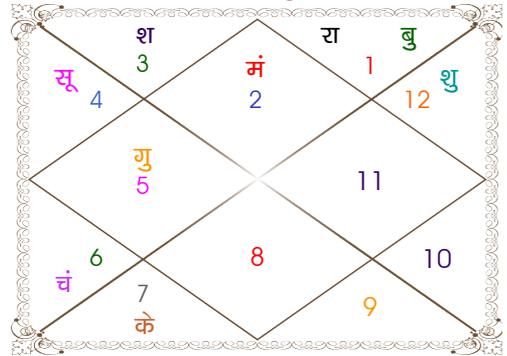
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 20:01:45	सिंह 05:24:08
2	सिंह 20:01:45	कन्या 04:39:23
3	कन्या 19:17:00	तुला 03:54:37
4	तुला 18:32:14	वृश्चिक 03:09:51
5	वृश्चिक 18:32:14	धनु 03:54:37
6	धनु 19:17:00	मकर 04:39:23
7	मकर 20:01:45	कुम्भ 05:24:08
8	कुम्भ 20:01:45	मीन 04:39:23
9	मीन 19:17:00	मेष 03:54:37
10	मेष 18:32:14	वृष 03:09:51
11	वृष 18:32:14	मिथुन 03:54:37
12	मिथुन 19:17:00	कर्क 04:39:23

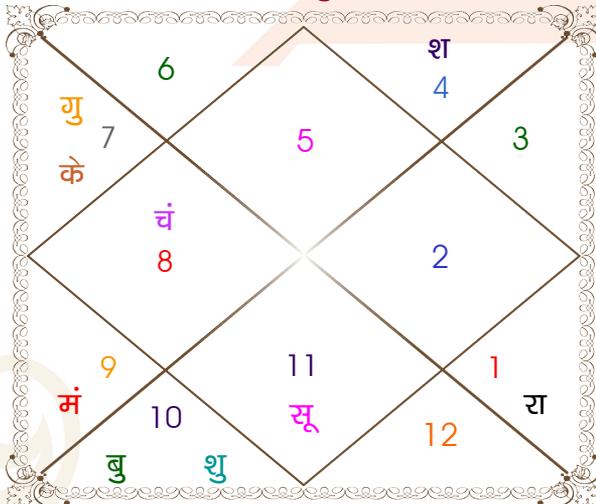
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	05:24:08
2	कन्या	01:11:47
3	तुला	00:53:37
4	वृश्चिक	03:09:51
5	धनु	05:35:22
6	मकर	06:31:09
7	कुम्भ	05:24:08
8	मीन	01:11:47
9	मेष	00:53:37
10	वृष	03:09:51
11	मिथुन	05:35:22
12	कर्क	06:31:09

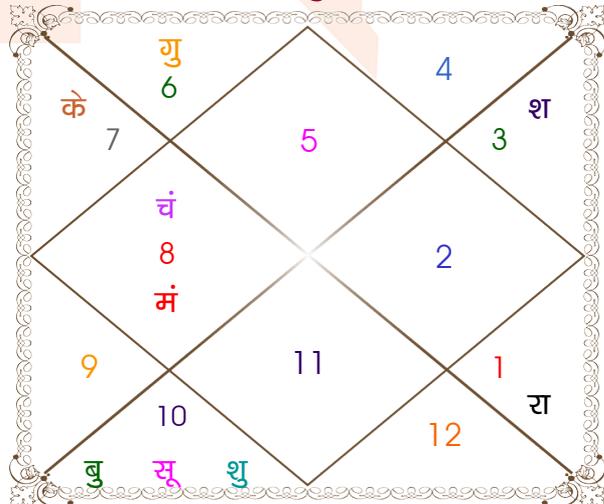
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 13 वर्ष 11 मास 8 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
03/02/2005	13/01/2019	13/01/2036	13/01/2043	13/01/2063
13/01/2019	13/01/2036	13/01/2043	13/01/2063	13/01/2069
03/02/2005	बुध 11/06/2021	केतु 10/06/2036	शुक्र 15/05/2046	सूर्य 03/05/2063
बुध 25/09/2005	केतु 08/06/2022	शुक्र 11/08/2037	सूर्य 15/05/2047	चंद्र 01/11/2063
केतु 04/11/2006	शुक्र 08/04/2025	सूर्य 16/12/2037	चंद्र 13/01/2049	मंगल 08/03/2064
शुक्र 04/01/2010	सूर्य 12/02/2026	चंद्र 18/07/2038	मंगल 15/03/2050	राहु 31/01/2065
सूर्य 17/12/2010	चंद्र 15/07/2027	मंगल 14/12/2038	राहु 14/03/2053	गुरु 19/11/2065
चंद्र 17/07/2012	मंगल 11/07/2028	राहु 01/01/2040	गुरु 13/11/2055	शनि 01/11/2066
मंगल 26/08/2013	राहु 28/01/2031	गुरु 07/12/2040	शनि 13/01/2059	बुध 08/09/2067
राहु 02/07/2016	गुरु 05/05/2033	शनि 16/01/2042	बुध 13/11/2061	केतु 13/01/2068
गुरु 13/01/2019	शनि 13/01/2036	बुध 13/01/2043	केतु 13/01/2063	शुक्र 13/01/2069

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
13/01/2069	13/01/2079	13/01/2086	14/01/2104	14/01/2120
13/01/2079	13/01/2086	14/01/2104	14/01/2120	00/00/0000
चंद्र 13/11/2069	मंगल 11/06/2079	राहु 25/09/2088	गुरु 04/03/2106	शनि 17/01/2123
मंगल 14/06/2070	राहु 29/06/2080	गुरु 19/02/2091	शनि 14/09/2108	बुध 04/02/2125
राहु 14/12/2071	गुरु 05/06/2081	शनि 26/12/2093	बुध 21/12/2110	00/00/0000
गुरु 14/04/2073	शनि 14/07/2082	बुध 14/07/2096	केतु 27/11/2111	00/00/0000
शनि 13/11/2074	बुध 12/07/2083	केतु 01/08/2097	शुक्र 28/07/2114	00/00/0000
बुध 14/04/2076	केतु 08/12/2083	शुक्र 02/08/2100	सूर्य 16/05/2115	00/00/0000
केतु 13/11/2076	शुक्र 06/02/2085	सूर्य 27/06/2101	चंद्र 14/09/2116	00/00/0000
शुक्र 14/07/2078	सूर्य 14/06/2085	चंद्र 27/12/2102	मंगल 21/08/2117	00/00/0000
सूर्य 13/01/2079	चंद्र 13/01/2086	मंगल 14/01/2104	राहु 14/01/2120	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 13 वर्ष 10 मा 19 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>बुध - सूर्य</b> 08/04/2025 12/02/2026	<b>बुध - चंद्र</b> 12/02/2026 15/07/2027	<b>बुध - मंगल</b> 15/07/2027 11/07/2028	<b>बुध - राहु</b> 11/07/2028 28/01/2031	<b>बुध - गुरु</b> 28/01/2031 05/05/2033
सूर्य 23/04/2025 चंद्र 19/05/2025 मंगल 06/06/2025 राहु 23/07/2025 गुरु 02/09/2025 शनि 21/10/2025 बुध 04/12/2025 केतु 23/12/2025 शुक्र 12/02/2026	चंद्र 27/03/2026 मंगल 27/04/2026 राहु 13/07/2026 गुरु 20/09/2026 शनि 11/12/2026 बुध 22/02/2027 केतु 25/03/2027 शुक्र 19/06/2027 सूर्य 15/07/2027	मंगल 05/08/2027 राहु 28/09/2027 गुरु 15/11/2027 शनि 12/01/2028 बुध 03/03/2028 केतु 24/03/2028 शुक्र 24/05/2028 सूर्य 11/06/2028 चंद्र 11/07/2028	राहु 28/11/2028 गुरु 01/04/2029 शनि 26/08/2029 बुध 05/01/2030 केतु 01/03/2030 शुक्र 03/08/2030 सूर्य 18/09/2030 चंद्र 05/12/2030 मंगल 28/01/2031	गुरु 19/05/2031 शनि 27/09/2031 बुध 22/01/2032 केतु 10/03/2032 शुक्र 26/07/2032 सूर्य 06/09/2032 चंद्र 14/11/2032 मंगल 01/01/2033 राहु 05/05/2033
<b>बुध - शनि</b> 05/05/2033 13/01/2036	<b>केतु - केतु</b> 13/01/2036 10/06/2036	<b>केतु - शुक्र</b> 10/06/2036 11/08/2037	<b>केतु - सूर्य</b> 11/08/2037 16/12/2037	<b>केतु - चंद्र</b> 16/12/2037 18/07/2038
शनि 08/10/2033 बुध 24/02/2034 केतु 22/04/2034 शुक्र 03/10/2034 सूर्य 22/11/2034 चंद्र 11/02/2035 मंगल 10/04/2035 राहु 04/09/2035 गुरु 13/01/2036	केतु 22/01/2036 शुक्र 16/02/2036 सूर्य 23/02/2036 चंद्र 07/03/2036 मंगल 15/03/2036 राहु 07/04/2036 गुरु 27/04/2036 शनि 20/05/2036 बुध 10/06/2036	शुक्र 21/08/2036 सूर्य 11/09/2036 चंद्र 16/10/2036 मंगल 10/11/2036 राहु 13/01/2037 गुरु 11/03/2037 शनि 17/05/2037 बुध 17/07/2037 केतु 11/08/2037	सूर्य 17/08/2037 चंद्र 28/08/2037 मंगल 04/09/2037 राहु 23/09/2037 गुरु 10/10/2037 शनि 31/10/2037 बुध 18/11/2037 केतु 25/11/2037 शुक्र 16/12/2037	चंद्र 03/01/2038 मंगल 16/01/2038 राहु 17/02/2038 गुरु 17/03/2038 शनि 20/04/2038 बुध 20/05/2038 केतु 01/06/2038 शुक्र 07/07/2038 सूर्य 18/07/2038
<b>केतु - मंगल</b> 18/07/2038 14/12/2038	<b>केतु - राहु</b> 14/12/2038 01/01/2040	<b>केतु - गुरु</b> 01/01/2040 07/12/2040	<b>केतु - शनि</b> 07/12/2040 16/01/2042	<b>केतु - बुध</b> 16/01/2042 13/01/2043
मंगल 26/07/2038 राहु 18/08/2038 गुरु 06/09/2038 शनि 30/09/2038 बुध 21/10/2038 केतु 30/10/2038 शुक्र 24/11/2038 सूर्य 01/12/2038 चंद्र 14/12/2038	राहु 09/02/2039 गुरु 01/04/2039 शनि 01/06/2039 बुध 25/07/2039 केतु 17/08/2039 शुक्र 20/10/2039 सूर्य 08/11/2039 चंद्र 10/12/2039 मंगल 01/01/2040	गुरु 16/02/2040 शनि 10/04/2040 बुध 28/05/2040 केतु 17/06/2040 शुक्र 13/08/2040 सूर्य 30/08/2040 चंद्र 27/09/2040 मंगल 17/10/2040 राहु 07/12/2040	शनि 09/02/2041 बुध 08/04/2041 केतु 01/05/2041 शुक्र 08/07/2041 सूर्य 28/07/2041 चंद्र 31/08/2041 मंगल 23/09/2041 राहु 23/11/2041 गुरु 16/01/2042	बुध 08/03/2042 केतु 29/03/2042 शुक्र 29/05/2042 सूर्य 16/06/2042 चंद्र 16/07/2042 मंगल 06/08/2042 राहु 29/09/2042 गुरु 17/11/2042 शनि 13/01/2043

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

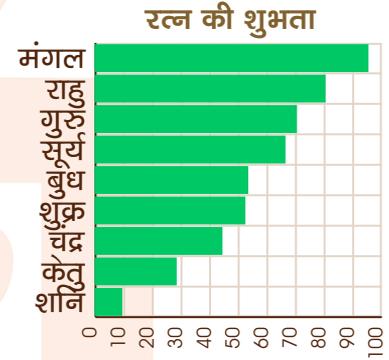
मूलांक	3
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	सन्तति सुख, भाग्योदय, सुख
गोमेद	राहु	80%	भाग्योदय, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	70%	धन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	66%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
मोती	चंद्र	44%	ग्रह कलेश, व्यय
लहसुनिया	केतु	28%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	9%	हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	13/01/2019	53%	19%	83%	59%	70%	58%	34%	86%	3%
बुध	13/01/2036	72%	19%	95%	66%	70%	58%	9%	80%	28%
केतु	13/01/2043	53%	19%	100%	53%	70%	58%	0%	67%	52%
शुक्र	13/01/2063	53%	19%	95%	59%	70%	64%	22%	86%	41%
सूर्य	13/01/2069	78%	53%	100%	53%	77%	28%	0%	67%	3%
चंद्र	13/01/2079	72%	59%	95%	59%	70%	52%	9%	67%	3%
मंगल	13/01/2086	72%	53%	100%	31%	77%	52%	9%	67%	41%
राहु	14/01/2104	53%	19%	83%	53%	70%	58%	22%	92%	3%
गुरु	14/01/2120	72%	53%	100%	31%	83%	28%	9%	80%	28%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/02/2005-26/05/2005	-----	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

#### फल

शुभ  
शुभ  
अशुभ  
शुभ  
शुभ

#### क्षेत्र

धनार्जन  
पराक्रम  
सुख हानि  
सन्तति  
दम्पति

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

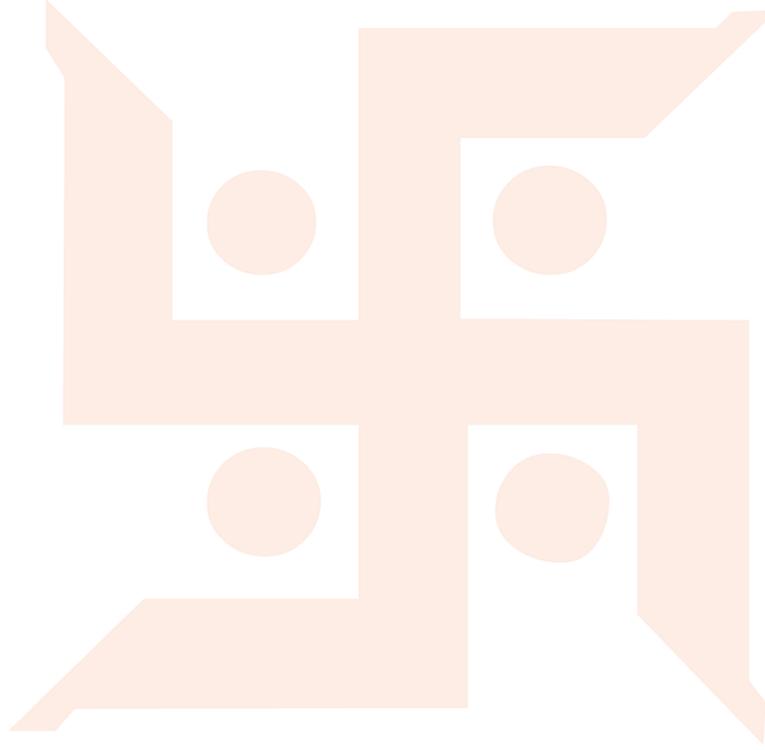
मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल पंचम भाव में है। यह भाव संतति विद्या तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी तथापि इसमें यदा कदा समस्याएं उत्पन्न होगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगी। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा यदा कदा उद्यता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की भी रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके संबंध रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं सहयोग आपको मिलता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी अतः इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार संबंधी शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकती हैं परन्तु इनके प्रभाव से आपको जीवन में विशिष्ट या अचानक धन लाभ की प्राप्ति भी हो सकती है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगी। इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगी तथा धनवान महिला के रूप में जानी जाएंगी। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे। इसके साथ ही सामाजिक मान सम्मान की भी प्राप्ति होगी द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार के कार्यों में होगा। साथ ही बाई आंख में कमजोरी या कोई निशान भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन के सुख का उपभोग भी आप प्रसन्नता पूर्वक करने में समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा न्यूनाधिक रूप से उनका उपभोग भी करेंगी । साथ ही जीवन में न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी ।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

### चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

## मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

## बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

## शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुःखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुःखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

## राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध  
( 13/01/2019 - 13/01/2036 )

बुध की महादशा 13/01/2019 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 13/01/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। प्रथम तथा द्वितीय भाव स्वामी शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, कार्यों में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विरोधियों पर विजय तथा नौकरी में लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, अशावादी और स्फूर्तिवान होंगे। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, त्वचारोग, स्नायविक समस्या तथा उदर रोग आदि मामूली बीमारियाँ हो सकती हैं। उचित उपाय के द्वारा इनमें से बहुतों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी किन्तु कभी-कभी बाधाएं भी आ सकती हैं। किन्तु, आप इन्हें दूर कर लेंगे और आपका उपार्जन उत्तम होगा। कुछ व्यय भी हो सकता है। आपकी नौकरी से अच्छा उपार्जन होगा। सट्टे से उत्तम लाभ होगा। कुल मिलाकर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग और मस्तिष्क से सम्बन्धित सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों की कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी, उन्हें सफलता मिलेगी और पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। अधीनस्थ कर्मचारी सहायता करेंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को भी आय तथा लाभ होगा, व्यवसाय में विस्तार होगा, विदेश से लाभ होगा तथा कार्य में वृद्धि होगी। अर्थ-व्यवसाय में उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा जमीन-जायदाद :

इस दशा में आपको आराम मिलेगा। आपको सम्पत्ति तथा वाहन-सुख की प्राप्ति होगी। आप जमीन-जायदाद की खरीद बिक्री करेंगे। कोई कानूनी विवाद यदि हो भी तो आपको सफलता मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी। विदेश यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप बहुत अच्छा करेंगे तथा परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षा तथा शैक्षिक सेवाओं में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभावान,

कूटनीतिक और बहुमुखी होंगे तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपको अपने बच्चों से सुख तथा लाभ मिलेगा। आपके जीवन साथी का अच्छे कार्यों में व्यय होगा, उन्हें जीविकोपार्जन के अवसर प्राप्त होंगे और विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति, यश और ख्याति मिलेगी तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, माता के साथ उनका सम्बन्ध मधुर होगा और उनके अनेक मित्र होंगे जबकि बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, उनके कार्यों में परिवर्तन और अचानक लाभ होगा। उनके साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको ननिहाल से लाभ, सफलता, उत्तम सम्मान तथा शासन से लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के दौरान कार्य-क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल रहेगी, आपकी पदोन्नति होगी और लाभ मिलेगा। केतु कठिनाई उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन हो सकता है। चन्द्र दशा में आपका विवाह और साझेदारों से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान जमीन-जायदाद, सम्पत्ति तथा लाभ मिल सकता है। इसके बाद राहु की दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा हो सकती है और रिश्तेदारों से सहायता मिल सकती है जबकि शनि की अन्तर्दशा में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य  
( 08/04/2025 - 12/02/2026 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/04/2025 को प्रारंभ होकर 12/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। सहकर्मि और सहयोग करेंगे। किरायेदार भी सहयोग करेंगे।

आपको धन और उच्चपद प्राप्त होंगे। प्रशासनिक क्षमता उत्तम होगी। अध्यात्म में रुचि होगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। यात्रा और कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है, उनके खर्च बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, उच्च पद मिलेगा। माता के पास सुख-साधन होंगे, साहस से हर समस्या का सामना करेंगी। आपके भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, सरकार से लाभ होगा, जीवनसाथी के माध्यम से धन आएगा, अध्यात्म में रुचि होगी।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे, सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे जबकि व्यापारियों के खर्च बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र  
( 12/02/2026 - 15/07/2027 )**

आपकी बुध की महादशा 13/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 12/02/2026 को प्रारंभ होकर 15/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है या संपत्ति क्रय कर सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सब सुख-सुविधाएं, आराम उपलब्ध रहेंगे। खेती से अच्छी आमदनी हो सकती है। वाहनसुख रहेगा। शिक्षा में सफलता मिलेगी। सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होंगी। सत्कार्य करेंगे जिनसे समाज को लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को सफलता, प्रसिद्धि और धन प्राप्त होंगे। आपके पिता के जीवन में अचानक कुछ घट सकता है। माता को सुख, सुविधाएं और प्रसन्नता मिलेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सुविधाएं, शिक्षा, राजनीति में रुचि, कार्यों में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य और स्पर्धियों पर विजय का संकेत है। आपकी संतान को शिक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। उनकी स्पर्धियों पर विजय होगी। अगर वे सेवारत हैं तो परिवर्तन, तबादला और अधिक खर्च हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। सहकर्मी सहायता करेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे और सफल रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अत्यधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

### **अंतर्दशा :- बुध - मंगल ( 15/07/2027 - 11/07/2028 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 15/07/2027 को प्रारंभ होकर 11/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपकी बुद्धिमत्ता और शिक्षा उत्तम रहेंगी। शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय होगी। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपकी संतान स्वस्थ और सफल होगी। आप धनी, स्वस्थ और सफल होंगे। प्रभावशाली मित्र होंगे जिनसे लाभ होगा। सुख के साधन उपलब्ध होंगे, तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं, कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। धन की बचत में कठिनाई आ सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम रोगप्रतिरोधक क्षमता, उत्तम स्वास्थ्य, धन और साझेदारी से लाभ का योग है। आपकी संतान के लिए आत्मविश्वास, ऊर्जा, सौभाग्य का संकेत है। अगर वे कार्यरत हैं तो धन, सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र के रोगों में बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, लाल दाल और लाल चंदन दान में दें।

### **अंतर्दशा :- बुध - राहु ( 11/07/2028 - 28/01/2031 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह

11/07/2028 को प्रारंभ होकर 28/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप भौतिक सुख-साधनों से संपन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, लक्ष्य की ओर एकाग्रचित्त रहेंगे। लघु यात्राओं, लेखन, प्रकाशन, छोटे भाई-बहनों से लाभ होगा। आत्म-विश्वास उत्तम रहेगा, बाधाओं के बावजूद आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। प्रसिद्ध बनेंगे। पड़ोसियों और रिश्तेदारों से संबंध उत्तम रहेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता में आत्मविश्वास उत्तम होगा। माता धनी और सम्मानित होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विवाह, साझेदारी से लाभ, यात्रा, व्यापार का विस्तार, धनलाभ, आर्थिक प्रगति के अवसर और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है, धनी बनेंगे, नाम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी। व्यापारियों का लाभ उत्तम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः